

Vol 1 Issue 6 March 2012

ISSN No : 2249-894X

---

*Monthly Multidisciplinary  
Research Journal*

*Review Of  
Research Journal*

Chief Editors

---

**Ashok Yakkaldevi**  
A R Burla College, India

**Ecaterina Patrascu**  
Spiru Haret University, Bucharest

**Kamani Perera**  
Regional Centre For Strategic Studies,  
Sri Lanka

## Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2249-894X

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

### Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

### Advisory Board

Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Mabel Miao Center for China and Globalization, China
Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Xiaohua Yang University of San Francisco, San Francisco	Ruth Wolf University Walla, Israel
Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Karina Xavier Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA	Jie Hao University of Sydney, Australia
Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania	May Hongmei Gao Kennesaw State University, USA	Pei-Shan Kao Andrea University of Essex, United Kingdom
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Marc Fetscherin Rollins College, USA	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania
	Liu Chen Beijing Foreign Studies University, China	Ilie Pintea Spiru Haret University, Romania
Mahdi Moharrampour Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran	Nimita Khanna Director, Isara Institute of Management, New Delhi	Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai
Titus Pop PhD, Partium Christian University, Oradea, Romania	Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	Sonal Singh Vikram University, Ujjain
J. K. VIJAYAKUMAR King Abdullah University of Science & Technology, Saudi Arabia.	P. Malyadri Government Degree College, Tandur, A.P.	Jayashree Patil-Dake MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC), Kachiguda, Hyderabad
George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi	S. D. Sindkhedkar PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [ M.S. ]	Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary Director, Hyderabad AP India.
REZA KAFIPOUR Shiraz University of Medical Sciences Shiraz, Iran	Anurag Misra DBS College, Kanpur	AR. SARAVANAKUMAR LAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI, TN
Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur	C. D. Balaji Panimalar Engineering College, Chennai	V. MAHALAKSHMI Dean, Panimalar Engineering College
Awadhesh Kumar Shirotriya	Bhavana vivek patole PhD, Elphinstone college mumbai-32	S. KANNAN Ph.D , Annamalai University
	Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust), Meerut (U.P.)	Kanwar Dinesh Singh Dept. English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India  
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world



## निर्मल वर्मा के उपन्यासों में अस्तित्ववादी चिंतन

श्री शोक सलीम बाषा

हिन्दी प्राध्यापक, उस्मानिया कॉलेज, कर्नूल(आ.प्र.)

### प्रस्तावना :

निर्मल वर्मा उपन्यास को समाज की आलोचना का औजार मानते हैं। यह वह माध्यम है जिसका लक्ष्य समाज और दर्शन का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करें। उपन्यास की विधा अन्य विधाओं की अपेक्षा नई है। यह ऐसी कथात्मक गद्य विधा है। जो समय के भीतर प्रवाहित होता है किन्तु घटनाओं में बहता हुआ समय है। वह यथार्थ को अपने में समेटती है। जिसमें हमारे संस्कार, स्मृतियाँ, काल, जीवन और मृत्युबोध शामिल होता है। निर्मल वर्मा के विवेचित तीन उपन्यास वे दिन, लालटीनकी छत और एक चिथडा सुख में इसकी प्रतीति होती है।

### वे दिन:

यह उनका प्रथम उपन्यास है। जिसमें क्रिसमस के चन्द शांतिपूर्ण दिनों की गाथा है। यह चेकोस्लोवोकिया के परिवेश में लिखा गया हिन्दी का पहला उपन्यास है जिसमें मानवीय सम्बन्धों की जटिलता और यूरोपीय जीवन में व्याप्त आतंक को सामने लाया गया है। इस उपन्यास के प्रकाशित होते ही आलाचकों ने उन पर विदेशीपन का आरोप लगाया था। इस पर निर्मल वर्मा का कथन दृष्टान्त है। मैं अब विदेशीपन का आरोप का इतना आदी हो चुका हूँ कि ज्यादा अखरता नहीं। मैं तो सोचता हूँ, ठीक समझता हूँ। वही लिखने की कोशिश करता हूँ। उसमें कहाँ तक सफल हो पाता हूँ, यह शायद मैं स्वयं ठीक-ठीक 'जज' नहीं कर सकता। शायद हम जितना अनुभवों को रूपायित करने की चेष्टा करते हैं, वही दूसरे से कुछ भिन्न हो जाते हैं।

'वे दिन' हिन्दी उपन्यास की परम्परागत रचना विधान से हटा हुआ उपन्यास है। न तो उपन्यास में घटनाओं का अम्बर है और न अनावश्यक प्रसंगों की भरमार ही। इसमें बर्फ और धूप है। घुट्टियों का शालीपन है। पुराने शहर का पुल और टावर है अर्थात् वातावरण का सजीव चित्रण है। इन सबके बीच एक अवसाद पूर्ण प्रेमकथा रायना और कथानायक के मध्य चुपचाप चलती है। 'वह एकटक मेरी ओर देखती रही। फिर उसने मेरे सिर को अपने पास खींच लिया। मैंने अपनी आंखें उसके बालों के भूरे, गर्म अंधेरे में मूंद ली। उसकी देह की कंपन मेरे कोट में छीलती हुई नंगे बदन को टटाननी लगी थी।'

इस उपन्यास का पूरा वातावरण उदासीन जटिलता और आतंक से भरा दिखाई पड़ता है। इसमें द्वितीय विश्वयुद्ध से जन्मी मनःस्थि को सफलता से अभिव्यक्त किया गया। हर पात्र का अपना अतीत है जो यूरोप की युद्धोत्तर पीढ़ी की अभिशप्त छाया से जुड़ा है और उपन्यास के विभिन्न पात्रों को

जोड़ने वाली एक रहस्यमय नियती भी है। यह शायद वह सीमा है जिसको आगे कोई किसी की मदद नहीं कर सकता था। लगता था कोई बाहर का फंदा है जिसकी सब गांठें, सब सिरें, दूसरे के हाथ में हैं। जिन्हें हम देख नहीं सकते।

इस प्रकार यह अभारतीय परिवेश के आधार पर लिखा गया उपन्यास है जो एक दिशा संकेत देता है। इसलिए यह हिन्दी उपन्यास का नया मोड़ है।

### लाल टीन की छत:

यह निर्मल वर्मा का दूसरा उपन्यास है जो 1970.74 के चार वर्षों के बीच दिल्ली, लन्दन और शिमला में लिखा गया है।

‘लाल टिन की छत’ में एक किशोरी काया के इर्द-गिर्द बने रहस्यमय एवं आतंकपूर्ण और उसकी वयः संधि की यौन चेतना की संवेदनाओं और अनुभूतियों को कथा का आधार बनाया गया है।

काथा एक पहाड़ी शहर में अपने छोटे भाई, माँ और नौकर मंगतू के साथ, एक बूढ़ी ईसाई औरत के पड़ोस में, लाल टीन की छत में रहती है और कुछ दिन रहकर वापस मेरठ चली जाती है, जिसकी स्मृति में काया जीती है। उससे लगता है कि इस मकान में लामा अब भी है, उसी कमरे में जो अब साँय-साँय करता है।

काया काफी बड़ी होने के बाद भी वयः संधि के जीवन को याद करती हुई कुछ स्थितियों संवेदनाओं, अनुभूतियों और घटनाओं को व्यक्त करती है। काया कहती है, “मुझे अपने को खोलकर, उसे छोड़ देना होगा। मैं अब उसके बोझ को नहीं संभाल सकती, उसकी बदहवास भूखी चाहना को, दो चार तसल्ली के टुकड़े देकर तृप्त नहीं कर सकती। मैं उसे छोड़ दूंगी, उसे जाने दूंगी।

इस प्रकार काया जिन स्थितियों में अकेलेपन को महसूस करती है, भटकती है तथा भ्रमों के जाल को बुनती है और भय, आतंक, रहस्य की अनुभूतियों से गुजरती है।

इस उपन्यास में कई ऐसे विवरण हैं जिनका सम्बन्ध इसी एशन थीम्स से है जैसे गिन्नी की मृत्यु, मृत शिशु का जन्म, मिस जोसुआ की मृत्यु, काली का मंदिर आदि रहस्यमयता पर चमकते रक्त के एक उतावले धब्बे की तरह, कभी जीवन, कभी मृत्यु, कभी दोनों का मिलाजुला अनिवार्य रंग।

लाल टीन की छत में हम देखते हैं कि सामान्य जनजीवन निर्मल वर्मा के सर्जक को प्रेरित नहीं करता अपितु वे असामान्य चरित्रों के संश्लिष्ट एवं अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों को ही उजागर करते हैं।

### एक चिथड़ा सुख:

एक चिथड़ा सुख रचनात्मक स्तर पर स्थूल यथार्थ की समीओं का अतिक्रमण करके जीवन सत्य की नयी संभावनाओं को उजागर करता है। उपन्यास को केन्द्र वह सुख है जो चिथड़ा हो गया और वह दुख भी जो बिच्ची, इरा, मुन्नु और नित्ती भाई की जिन्दगी में समाया हुआ है। निर्मल वर्मा ने ऐसे पात्रों का सृजन किया है जो अपनी जिन्दगी में समाया हुआ है। निर्मल वर्मा ने ऐसे पात्रों का सृजन किया है जो अपनी जिन्दगी के मर्मांतक सूनेपन में जीते हुए पाठक की चेतना को बहुत गहरे तक झकझारते हैं।

निर्मल वर्मा ने इस उपन्यास में दुख का मन परखना चाहा है— “ऐसा दुख जो जिन्दगी के चमत्कार और मृत्यु के सरस्य को उघाड़ता है।” उपन्यास के पात्रों की एक अनवरत खोज ही एक चिथड़ा सुख है।

एक चिथड़ा सुख में बुद्धिजीवी तबके के पात्रों को लिया गया है। “वह भारतीय मध्यवर्ग के बुद्धिजीवियों की दुनिया थी। मैं उसे कम यथार्थ नहीं मानता और यह नहीं स्वीकारता कि एक किसान की दुनिया नकली है।” यह निर्मल वर्मा का कथन है।

वस्तुतः निर्मल वर्मा का उपन्यास एक चिथड़ा सुख में मानव सम्बन्धों की महीन रेशों से बुने सुख को बहुत बारीकी और हल्के हाथों से संभाला गया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि निर्मल वर्मा अपने समय की गहरी पहचान रखने वाले रचनाकार हैं। वे रचनात्मक स्तर पर स्थूल यथार्थ की सीमाओं का अतिक्रमण करके सत्यों की, नयी संभावनाओं की अभिव्यक्ति करते हैं।

# Publish Research Article

## International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Books Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

### Associated and Indexed, India

- ★ Directory Of Research Journal Indexing
- ★ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ★ OPEN J-GATE

### Associated and Indexed, USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal  
258/34 Raviwar Peth Solapur-  
413005, Maharashtra  
Contact-9595359435

E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com